

पूर्ण आनन्द लहरि



॥ ब्रह्मविदाभ्योति परम् ॥

चतुर्भुजे चन्द्रकलावतंसे कुचोन्नते कुङ्कुमरागशोणे ।
पुण्डेश्वराशाङ्कशपुष्पवाणहस्ते नमस्ते जगदेकमातः ॥

पृष्ठ: - २

Feb 2015 – Mar 2015

दलं - १२

ந குரோரதிக் ந குரோரதிக் ந குரோரதிக் ந குரோரதிக் ।
ந குரோரதிக் ந குரோரதிக் ந குரோரதிக் ந குரோரதிக் ॥



தெளிவு குருவின் திருமேனி காண்டல்
தெளிவு குருவின் திருநாமம் செப்பல்
தெளிவு குருவின் திருவார்த்தை கேட்டல்
தெளிவு குருவுரு சிந்தித்தல் தானே!

नव

दुर्गा



। नव दुर्गाम्बा समष्टि स्वरूपिणि श्री वनदुर्गाम्बा श्री पादुकां पूजयामि नमः ।

Table of Contents:

| # | Topics | Page |
|----|---------------------------------|------|
| 1 | Introduction | 5 |
| 2 | Devi AshtAngam | 6 |
| 3 | Naimittika prakaranam - puShya | 9 |
| 4 | vanadurgAmbA mantra japa krama | 12 |
| 5 | vanadurgAmbA AvaraNa pUjA krama | 18 |
| 6 | vanadurgAmbA ashtOttaram | 28 |
| 7 | vanadurgAmbA hRudayam | 30 |
| 8 | vanadurgAmbA kavacam | 34 |
| 9 | vanadurgAmbA irattaimanimalai | 40 |
| 10 | Q & A - sadA vidyA anusaMhatiH | 43 |

॥ शिवादि श्री गुरुभ्यो नमः ॥

Introduction

We covered all the dashamahAvidyA mantra, pUjA and stOtra kramAs in the past 10 months. With this month, we will successfully complete the second year of our monthly magazine pUrNanandalahari.

In this issue we bring the mantra japa kramA, AvaraNa pUjA kramA, and nyAsAs of vanadurgAmbA. The vanadurgA ashtOttara, kavacA, hRudayam, and a tamil composition – vanadurga irattaimanimAlai by shrl nArAyaNa bhArati (son of shrl pUrNAAnandanAtha) have been included as well.

As usual, we would like to caution the upAsakAs that these dEvatAs CANNOT be taken lightly and the mantrAs considered like any other mantra. As the tantras rightly caution, this path is like walking on a sword and can only be ventured into by the Grace of the GurunAthA. The upAsana karma of these dEvatAs demands strict yamA and niyamAs and also ardent faith on the Guru and the dEvatA. It is important to understand the meaning of the mantra, the physical representation of the dEvatA, and contemplation on the deeper aspects of the same. These can only be provided by the Guru and by the power of the sAdhanA.

These mantras cannot be taken lightly and readers are strongly advised to check with their Guru's prior to start practicing any mantra or procedure as detailed in this issue. We thank Shrl yOgAmbA samEta AtmAnandanAthA (Shri Ramesh Kutticad) for proof correction and authoring the Q&A section.

Lalithai vEdam sarvam.

Surrendering to the holy pAdukAs of Shri Guru,

प्रकाशाम्बा समेत प्रकाशनन्दनाथ

देवी मान अष्टाङ्गम

श्री आदिगुरोः परशिवस्य आज्ञया प्रवर्तमान देवीमानेन षड्क्रिंशत् तत्वात्मक सकल प्रपञ्च सृष्टि स्थिति संहार तिरोधान अनुग्रह कारिण्याः पराशक्तेः ऊर्ध्व भूविभ्रमे नं घ्राण तत्व महाकल्पे दं चक्षुस्तत्व कल्पे थं त्वक् तत्व महायुगे खं सदाशिव तत्व युगे दं चक्षु तत्व परिवृत्तौ घं सुब्द्विद्या तत्व वर्षे – श्री ललितात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिका प्रसादसिद्ध्यर्थे यथा शक्ति (जप क्रम) सपर्याक्रमम् निर्वतयिष्ये ।

| | FEB 16 | FEB 17 | FEB 18 | FEB 19 |
|---------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| मासे | आं मानदा | आं मानदा | आं मानदा | आं मानदा |
| तत्व दिवसे | भं पायु | मं उपस्थ | यं शब्द | रं स्पर्श |
| दिन नित्यायां | ऊं वज्रेश्वरि | उं वह्निवासिनि | ईं भैरुण्डा | इं नित्यक्लिन्ना |
| वासरे | स्वभावानन्दनाथ | प्रतिभावानन्दनाथ | सुभगानन्दनाथ | प्रकाशानन्दनाथ |
| घटिकोदये | य – कार | अ – कार | ए – कार | च – कार |
| | FEB 20 | FEB 21 | FEB 22 | FEB 23 |
| मासे | आं मानदा | आं मानदा | आं मानदा | आं मानदा |
| तत्व दिवसे | लं रूप | वं रस | शं गच्छ | षं आकाश |
| दिन नित्यायां | आं भगमालिनि | अं कामेश्वरी | अं कामेश्वरी | आं भगमालिनि |
| वासरे | विमर्शानन्दनाथ | आनन्दानन्दनाथ | ज्ञानानन्दनाथ | सत्यानन्दनाथ |
| घटिकोदये | त – कार | य – कार | अ – कार | ए – कार |
| | FEB 24 | FEB 25 | FEB 26 | FEB 27 |
| मासे | आं मानदा | आं मानदा | आं मानदा | आं मानदा |
| तत्व दिवसे | सं वायु | हं वह्नि | ळं जल | क्षं पृथ्वी |
| दिन नित्यायां | इं नित्यक्लिन्ना | ईं भैरुण्डा | उं वह्निवासिनि | ऊं वज्रेश्वरि |
| वासरे | पूर्णानन्दनाथ | स्वभावानन्दनाथ | प्रतिभावानन्दनाथ | सुभगानन्दनाथ |
| घटिकोदये | च – कार | त – कार | य – कार | अ – कार |

| | FEB 28 | MAR 1 | MAR 2 | MAR 3 |
|---------------|------------------|----------------|-----------------|------------------|
| मासे | आं मानदा | इं पूषा | इं पूषा | इं पूषा |
| तत्व दिवसे | अं शिव | कं शक्ति | खं सदाशिव | गं ईश्वर |
| दिन नित्यायां | ऋं शिवदूति | ऋं त्वरिता | लृं कुलसुन्दरि | लृं नित्या |
| वासरे | प्रकाशानन्दनाथ | विमर्शानन्दनाथ | आनन्दानन्दनाथ | ज्ञानानन्दनाथ |
| घटिकोदये | ए - कार | च - कार | त - कार | य - कार |
| | MAR 4 | MAR 5 | MAR 6 | MAR 7 |
| मासे | इं पूषा | इं पूषा | इं पूषा | इं पूषा |
| तत्व दिवसे | घं सुद्धविध्या | डं माया | चं कला | छं अविद्या |
| दिन नित्यायां | एं नीलपताका | ऐं विजया | ओं सर्वमङ्गला | ओं ज्वालामालिनि |
| वासरे | सत्यानन्दनाथ | पूर्णानन्दनाथ | स्वभावानन्दनाथ | प्रतिभावानन्दनाथ |
| घटिकोदये | अ - कार | ए - कार | च - कार | त - कार |
| | MAR 8 | MAR 9 | MAR 10 | MAR 11 |
| मासे | इं पूषा | इं पूषा | इं पूषा | इं पूषा |
| तत्व दिवसे | जं राग | झं काल | जं नियति | टं पुरुष |
| दिन नित्यायां | अं चिन्ना | अं चिन्ना | ओं ज्वालामालिनि | ओं सर्वमङ्गला |
| वासरे | सुभगानन्दनाथ | प्रकाशानन्दनाथ | विमर्शानन्दनाथ | आनन्दानन्दनाथ |
| घटिकोदये | य - कार | अ - कार | ए - कार | च - कार |
| | MAR 12 | MAR 13 | MAR 14 | MAR 15 |
| मासे | इं पूषा | इं पूषा | इं पूषा | इं पूषा |
| तत्व दिवसे | ठं पकृति | डं अहंकार | ढं बुद्धि | णं मनस् |
| दिन नित्यायां | ऐं विजया | एं नीलपताका | लृं नित्या | लृं कुलसुन्दरि |
| वासरे | ज्ञानानन्दनाथ | सत्यानन्दनाथ | पूर्णानन्दनाथ | स्वभावानन्दनाथ |
| घटिकोदये | त - कार | य - कार | अ - कार | ए - कार |
| | MAR 16 | MAR 17 | MAR 18 | MAR 19 |
| मासे | इं पूषा | इं पूषा | इं पूषा | इं पूषा |
| तत्व दिवसे | तं श्रोत्र | थं त्वक् | दं चक्षुः | धं जिह्वा |
| दिन नित्यायां | ऋं त्वरिता | ऋं शिवदूति | ऊं वज्रेश्वरि | उं वह्निवासिनि |
| वासरे | प्रतिभावानन्दनाथ | सुभगानन्दनाथ | प्रकाशानन्दनाथ | विमर्शानन्दनाथ |
| घटिकोदये | च - कार | त - कार | य - कार | अ - कार |

पर्वा दिनेभ्यः

| | America | India |
|----------------|-------------|-------------|
| अमावास्या | 18 Feb 2015 | 18 Feb 2015 |
| मास सङ्करान्ति | 14 Mar 2015 | 15 Mar 2015 |
| पूर्णिमा | 4 Mar 2015 | 5 Mar 2015 |
| कृष्ण अष्टमि | 13 Mar 2015 | 13 Mar 2015 |
| कृष्ण चतुर्दशि | 18 Mar 2015 | 19 Mar 2015 |
| अमवास्या | 19 Mar 2015 | 20 Mar 2015 |

अन्य पूजा दिनेभ्यः

| | America | India |
|---------------|-------------|-------------|
| शुक्ल चतुर्थि | 21 Feb 2015 | 22 Feb 2015 |
| कृष्ण चतुर्थि | 9 Mar 2015 | 10 Mar 2015 |

विशेष पर्वा दिनेभ्यः

| | America | India |
|-------------|------------|------------|
| Masi Magham | 4 Mar 2015 | 5 Mar 2015 |
| | | |

नैमित्तिक प्रकरणम् - मास पौर्णम्याम् कृत्यम् फाल्गुन पूर्णिमा - शुक्ल तिल रक्त कुसुमादि पूजा

śrī vidyā saparyā has two frequencies, the nityā and naimittika. Daily ritual- nitya- is to be done in during daytime. Naimittika is performed on five days in a month – viz. paurnami, amāvāsyā, kṛṣṇa pakṣa aṣṭami, kṛṣṇa pakṣa caturdaśī and māsa saṅkramana after sunset with special offerings. Tantra has indicated a monthly schedule of things available at those seasons of a year to be offered as these “special” offerings, mostly on those respective paurnami, which have been compiled in Nityotsava by śrī umānandanātha. The month followed here is the cāndramāna- lunar calendar. We have covered the mAgha month pUjA in the past issue.

Next is the phalguna month, which has the white sesame seed, red flowers and naivedya of ApUpA pUjA. Offering flowers made of silver and gold in the shape of lotus, or lily, mango flowers, or madhuka flowers (tamil – illuppai, hindu – mahuA) is this month’s agenda. Gather the gold or silver flowers as mentioned above. Chant

ॐ शिवं प्रसादं सम्भूतं अत्रं सन्नितितोभवत् ।
देवी कार्यं समुद्दिश्य नीतञ्चासि शिवाज्ञया ॥

Keep them in a sliver vessel, sprinkle water with mūla mantra.

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वर्णं रजतादि पुष्पदेवतायै देवतायै नमः । गन्धं समर्पयामि ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वर्णं रजतादि पुष्पदेवतायै देवतायै नमः । पूष्पाणि पूजयामि ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वर्णं रजतादि पुष्पदेवतायै देवतायै नमः । धूपं आध्रापयामि ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वर्णं रजतादि पुष्पदेवतायै देवतायै नमः । दीपं सन्दर्शयामि ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वर्णं रजतादि पुष्पदेवतायै देवतायै नमः । नैवेद्यं निवेदयामि ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वर्णं रजतादि पुष्पदेवतायै देवतायै नमः । ताम्बूलादि समस्तोपचारपूजान् कल्पयामि ।

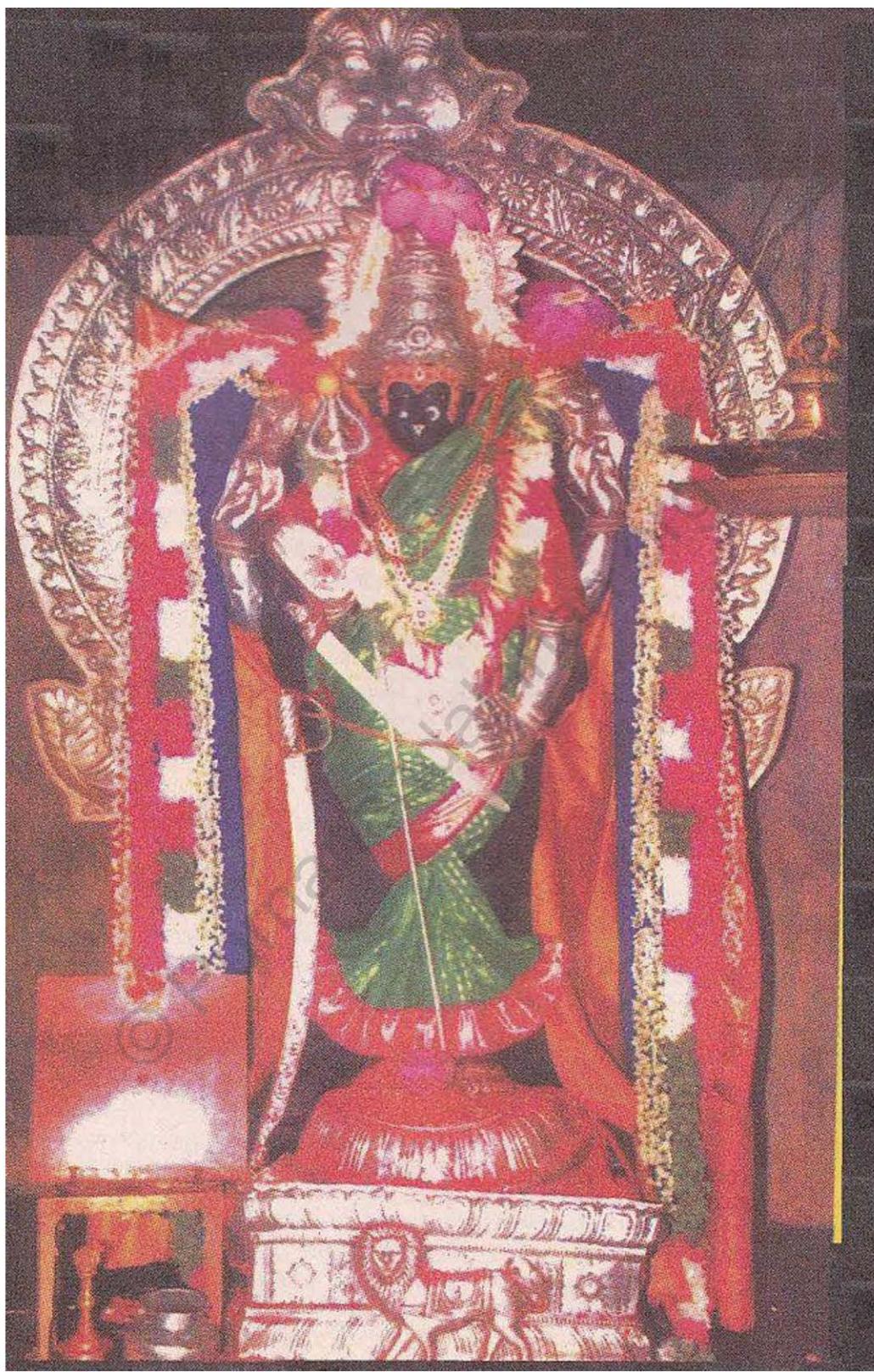
Cover with a clean cloth and leave overnight in a clean place. During paurnami pūja, add in the resolve (sankalpa)

स्वर्ण-रजतादि-निर्मित-पङ्कज-कल्हार-आम्र-मधूक-कुसुमार्चनपूर्वकं यथा
सम्भवद्रव्यैः यथाशक्ति सपर्याक्रमम् निर्वर्तयिष्ये ।

Before the main AvaraNa pUjA, pray to Devi

षोडशार्णं जगन्मातः वाञ्छितार्थफलप्रदे ।
हत्स्थान् पूरय मै कामान् देवी कामेश्वरेश्वरि ॥

Worship all the āvaraṇa devatās with flowers and again with the silver and gold flowers.
Do japa of mūla mantra thousand times, with one-tenth the aṅgopāṅga mantras.
Worship śakti and offer her the best of your capacity. Have Devi Prasad along with like-minded aspirants and be Happy.



। कदिरामङ्गल वासिनी श्री वनदुर्गाम्बा श्री पादुकां पूजयामि नमः ।

श्री वनदुर्गाम्बा मन्त्र जप क्रमः

अस्य श्री वनदुर्गाम्बा महा मन्त्रस्य
 आरण्यक ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः । श्री वनदुर्गाम्बा देवता ।
 दुं बीजं । स्वाहा शक्तिः ।

श्री वनदुर्गाम्बा प्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।
 मूलेन त्रिः व्यापकं कुर्यात् ।

मन्त्रेण कराङ्गन्यासं कुर्यात् ।
 ॐ भूर्भुवसुवरोऽइति दिग्बन्धः ।

कुल्लुका – शिरोमुद्रया शिरसे न्यस्य । ॐ दुं इति दशवारं जपेत् ।

सेतुः – हृदयमुद्रया हृदये न्यस्य । ॐ एं ह्रीं ह्रीं इति एकाक्षर सेतु विद्यां त्रिवारं जपेत् ।

महासेतुः – कण्ठे न्यास मुद्रया न्यस्य । ॐ एं ह्रीं श्रीं ॐ इति महासेतु विद्यां त्रिवारं जपेत् ।

निर्वाण विद्या – नाभौ न्यास मुद्रया न्यस्य ।
 ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ऋूं लं लूं एं ऐं ओं औं अं अः
 कं खं गं घं डं
 चं छं जं झं जं
 टं ठं डं ढं णं
 तं थं दं धं नं
 पं फं बं भं मं

यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं
 ऐं (वनदुर्गाम्बा मूलं) ऐं
 अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ऋं लृं लृं एं एं ओं ओं अं अः
 कं खं गं घं डं
 चं छं जं झं जं
 टं ठं डं ढं णं
 तं थं दं धं नं
 पं फं बं भं मं
 यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं ॐ – शिरो मुद्रया न्यस्य । ©

दीपनम् – ॐ (वनदुर्गाम्बा मूलं) ॐ
बन्धनम् – क्रीं ॐ क्रीं
मुखशोधनम् – ऐं ऐं ऐं

ध्यानम्

सात्विक ध्यानम् –

हैमप्रख्यामिन्दुखण्डात्तमौलिं शङ्खारीष्टाभीतिहस्तां त्रिनेत्राम् ।
 हैमाब्जस्थां पीतवस्त्रां प्रसन्नां देवीं दुर्गा दिव्यरूपां नमामि ॥

राजस ध्यानम् –

अरि-शङ्ख-कृपाण-खेट-बाणान् स-धनुः-शूलक-तर्जनीर्दधाना ।
 भवतां महिषोत्तमांगसंस्था नवदूर्वासदृशी श्रियोऽस्तु दुर्गा ॥

तामस ध्यानम् –

चक्रदर-खड़-खेटक-शर-कार्मुक-शूल-संज्ञक-कपालैः ।
ऋषि-मुसल-कुन्तक-नन्दक-वलय-गदाभिन्दिपाल-शक्त्याख्यैः ॥

उद्यदिवकृतिभुजाढ़ा महिषके सजलजलदसंकाशा ।
सिंहस्था वाग्निनिभा पद्मस्था वाथ मरकतश्यामा ॥

व्याघ्रत्वक्परिधाना सर्वाभरणान्विता त्रिनेत्रा च ।
अहिकलितनीलकुंचितकुन्तलविलसत्किरीटशशिकला ॥

सर्पमयवलयनूपुर काञ्चीकेयूरहारसन्निभा ।
सुरदितिजाभयभयदा ध्येया कात्यायनी प्रयोहविधौ ॥

पञ्चपूजा

लं पृथिव्यात्मिकायै गन्थं कल्पयामि ।
हं आकाशात्मिकायै पुष्पाणि कल्पयामि ।
यं वाष्पात्मिकायै धूपं कल्पयामि ।
रं अग्न्यात्मिकायै दीपं कल्पयामि ।
वं अमृतात्मिकायै अमृतं महानैवेद्यं कल्पायामि ।
सं सर्वात्मिकायै ताम्बूलादि समस्तोपचारान् कल्पयामि ।

वनदुर्गाम्बा मूलं

VanadurgA mantra is used for attaining all puruShArthaAs. This mantra is very commonly used for prayOgAs for kAmArtha purposes and depending on the need and the situation, the bljAs are linked to the mUla mantra (in most cases, the mUIA mantra itself is often provided with the bljAksharAs). Various sampuTikarNas are commonly

associated with vanadurgA mantra to increase the potency of the mUla mantra to attain certain fruits. This has to be decided by the GurunathA and ONLY the Guru is capable of prescribing what is right for whom and at what stage. Hence we have restrained from presenting the mUla mantra for this dEvatA to avoid further confusions among the upAsakAs.

(वनदुर्गाम्बा मूलं) ॥

षडङ्ग न्यासः

वनदुर्गा मन्त्रेण षडङ्ग न्यासं कुर्यात्

ॐ भूर्भुवसुवरोँ इति दिग्विमोगः ।

ध्यानम्

सात्त्विक ध्यानम् -

हैमप्रख्यामिन्दुखण्डात्तमौलिं शङ्खरीष्टभीतिहस्तां त्रिनेत्राम् ।
हैमाब्जस्थां पीतवस्त्रां प्रसन्नां देवीं दुर्गां दिव्यरूपां नमामि ॥

राजस ध्यानम् -

अरि-शङ्ख-कृपाण-खेट-बाणान् स-धनुः-शूलक-तर्जनीर्दधाना ।
भवतां महिषोत्तमांगसंस्था नवदूर्वासदूशी श्रियेऽस्तु दुर्गा ॥

तामस ध्यानम् -

चक्रदर-खङ्ग-खेटक-शर-कार्मुक-शूल-संज्ञक-कपालैः ।
ऋषि-मुसल-कुन्तक-नन्दक-वलय-गदाभिन्दिपाल-शक्त्याख्यैः ॥

उद्यद्रिवकृतिभुजाद्ध्या महिषके सजलजलदसंकाशा ।
सिंहस्था वाग्निनिभा पद्मस्था वाथ मरकतश्यामा ॥

व्याघ्रत्वक्परिधाना सर्वभरणान्विता त्रिनेत्रा च ।
अहिकलितनीलकुंचितकुन्तलविलसत्किरीटशशिकला ॥

सर्पमयवलयनूपुर काञ्चीकेयूरहारसन्निभा ।
सुरदितिजाभयभयदा ध्येया कात्यायनी प्रयोहविधौ ॥

पञ्चपूजा

लं पृथिव्यात्मिकायै गन्थं कल्पयामि ।
हं आकाशात्मिकायै पुष्पाणि कल्पयामि ।
यं वाख्यात्मिकायै धूपं कल्पयामि ।
रं अग्न्यात्मिकायै दीपं कल्पयामि ।
वं अमृतात्मिकायै अमृतं महानैवेद्यं कल्पायामि ।
सं सर्वात्मिकायै ताम्बूलादि समस्तोपचारान् कल्पयामि ।



। श्री वनदुर्गाम्बा श्री पादुकां पूजयामि नमः ।

श्री वनदुर्गाम्बा आवरण पूजा क्रमः

पीठ पूजा

ॐ मं मण्डूकादि परतत्वाय नमः ।

नवशक्ति पूजा

आं प्रभायै नमः ।
 ईं मायायै नमः ।
 ऊं जयायै नमः ।
 एं सूक्ष्मायै नमः ।
 एं विशुद्धयै नमः ।
 ओं नन्दिन्यै नमः ।
 औं सुप्रभायै नमः ।
 अं विजयायै नमः ।
 अः सर्वसिद्धिदायै नमः ।

ॐ वज्रनखदंष्ट्रायुधाय महासिम्हाय हुं फण्णमः ।

(वनदुर्गाम्बा मूलं) – ७ वारं व्यापकं कुर्यात् ।

श्री वनदुर्गाम्बा आवाहनम् –

हैमप्रख्यामिन्दुखण्डात्तमौलिं शङ्खारीष्टाभीतिहस्तां त्रिनेत्राम् ।
 हैमाब्जस्थां पीतवस्त्रां प्रसन्नां देवीं दुर्गा दिव्यरूपां नमामि ॥

(वनदुर्गाम्बा मूलं) । श्री वनदुर्गाम्बायै नमः । – आवाहितो भव । – आवहन मुद्रां प्रदर्शय

(वनदुर्गाम्बा मूलं) । श्री वनदुर्गाम्बायै नमः । – स्थापितो भव । – स्थापण मुद्रां प्रदर्शय

(वनदुर्गाम्बा मूलं) । श्री वनदुर्गाम्बायै नमः । – संस्थितो भव । – संस्थितो मुद्रां प्रदर्शय

(वनदुर्गाम्बा मूलं) । श्री वनदुर्गाम्बायै नमः । – सन्निरुधो भव । – सन्निरुध मुद्रां प्रदर्शय

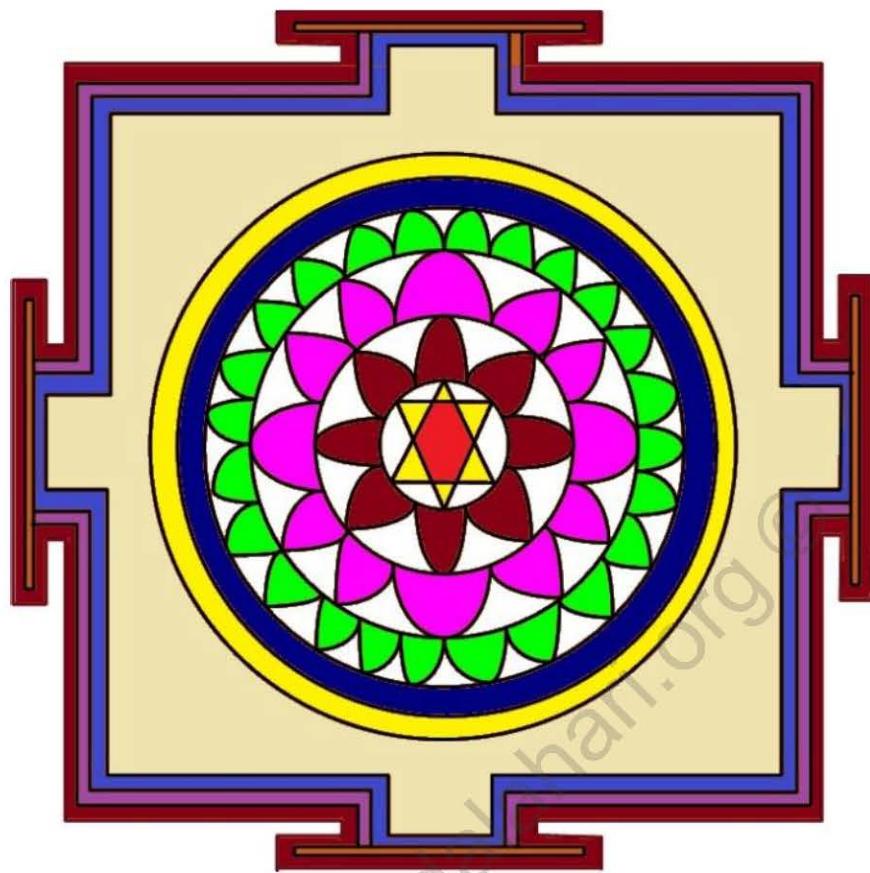
(वनदुर्गाम्बा मूलं) । श्री वनदुर्गाम्बायै नमः । – सम्मुखी भव । – सम्मुखी मुद्रां प्रदर्शय

(वनदुर्गाम्बा मूलं) । श्री वनदुर्गाम्बायै नमः । – अवकुण्ठितो भव । – अवकुण्डनमुद्रां प्रदर्शय

(वनदुर्गाम्बा मूलं) । श्री वनदुर्गाम्बा श्री पादुकां पूजयामि नमः । – वन्दन देनु योनि मुद्रांश्च प्रदर्शय

षडङ्ग तर्पणम् –

वनदुर्गा मन्त्रेण षडङ्ग तर्पणम् कुर्यात् ।



लयाङ्ग तर्पणम् –

(वनदुर्गाम्बा मूलं) – (दश वारम्)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुंसंविन्मये परे देवि परामृतसुचप्रिये ।
अनुज्ञां त्रिपुरो देहि परिवारर्चनाय मे ॥

प्रथमावरणम् –

(वनदुर्गाम्बा मूलं) – (त्रिः) संतप्य ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अभीष्टसिद्धिं मै देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

(वनदुर्गाम्बा मूलं) – श्री वनदुर्गाम्बा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (त्रिः)
संतर्प्य ।

श्री वनदुर्गाम्बायै नमः । – योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

द्वितीयावरणम् –

वनदुर्गा मन्त्रेण षडङ्गं तर्पणम् कुर्यात्

(वनदुर्गाम्बा मूलं) – (त्रिः) संतर्प्य ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अभीष्टसिद्धिं मै देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥

श्री वनदुर्गाम्बायै नमः । – योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

तृतीयावरणम् –

ॐ ह्रीं दुं आर्यायै नमः । आर्या श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः । दुर्गा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ ह्रीं दुं भद्रायै नमः । भद्रा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ ह्रीं दुं भद्रकाल्यै नमः । भद्रकाली श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ ह्रीं दुं अम्बिकायै नमः । अम्बिका श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ ह्रीं दुं क्षेम्यायै नमः । क्षेम्या श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ ह्रीं दुं वेदगर्भायै नमः । वेदगर्भा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं क्षेमकार्यै नमः । क्षेमकारी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(वनदुर्गाम्बा मूलं) – श्री वनदुर्गाम्बा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (त्रिः)
संतर्प्य ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥

श्री वनदुर्गाम्बायै नमः । – योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

तुरियावरणम् –

ॐ ह्रीं दुं अरये नमः । अरा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं दराय नमः । दरा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं कृपाणाय नमः । कृपाण श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं खेटाय नमः । खेट श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं बाणाय नमः । बाण श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं धनुषे नमः । धनुः श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं शूलाय नमः । शूल श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं कपालाय नमः । कपाल श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(वनदुर्गाम्बा मूलं) – श्री वनदुर्गाम्बा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (त्रिः)
संतर्प्य ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तुरियावरणार्चनम् ॥

श्री वनदुर्गाम्बायै नमः । – योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

पञ्चमावरणम् –

ॐ ह्रीं दुं आं ब्राह्म्यै नमः । ब्राह्मी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं ई माहेश्वर्यै नमः । माहेश्वरी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं ऊं कौमार्यै नमः । कौमारी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं ऋं वैष्णव्यै नमः । वैष्णवी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं लूं वाराह्यै नमः । वाराही श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं ऐं माहेन्द्र्यै नमः । माहेन्द्री श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं औं चामुण्डायै नमः । चामुण्डा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं अः महालक्ष्म्यै नमः । महालक्ष्मी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(वनदुर्गाम्बा मूलं) – श्री वनदुर्गाम्बा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (त्रिः)
संतर्प्य ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अभीष्टसिद्धिं मै देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ॥

श्री वनदुर्गाम्बायै नमः । – योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

षष्ठावरणम् –

ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः । दुर्गा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं वरवर्णिन्यै नमः । वरवर्णिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं आर्यायै नमः । आर्या श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं कनकप्रभायै नमः । कनकप्रभा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं कृत्तिकायै नमः । कृत्तिका श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ ह्रीं दुं भयदायै नमः । भयदा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं कन्यायै नमः । कन्या श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं स्वरूपायै नमः । स्वरूपा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(वनदुर्गाम्बा मूलं) – श्री वनदुर्गाम्बा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (त्रिः)
संतर्प्य ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अभीष्टसिद्धिं मै देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम् ॥

श्री वनदुर्गाम्बायै नमः । – योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

सप्तमावरणम् –

ॐ ह्रीं दुं चक्राय नमः । चक्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं शङ्खाय नमः । शङ्ख श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं गदायै नमः । गदा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं खड्य नमः । खड्य श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं पाशाय नमः । पाश श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं अङ्कुशाय नमः । अङ्कुश श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं शाराय नमः । शार श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं धनुषे नमः । धनुः श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(वनदुर्गाम्बा मूलं) – श्री वनदुर्गाम्बा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (त्रिः)
संतर्प्य ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अभीष्टसिद्धिं मै देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम् ॥

श्री वनदुर्गाम्बायै नमः । – योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

अष्टमावरणम्

ॐ ह्रीं दुं लां इन्द्राय नमः । इन्द्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं रां अग्नयै नमः । अग्नि श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं टां यमाय नमः । यम श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं क्षां निक्रृतयै नमः । निक्रृति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं वां वरुणाय नमः । वरुण श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं यां वायवै नमः । वायु श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं सां सौमाय नमः । सौम श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं हौं ईशानाय नमः । ईशान श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं आं ब्रह्माणे नमः । ब्रह्म श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं ह्रीं अनन्ताय नमः । अनन्त श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

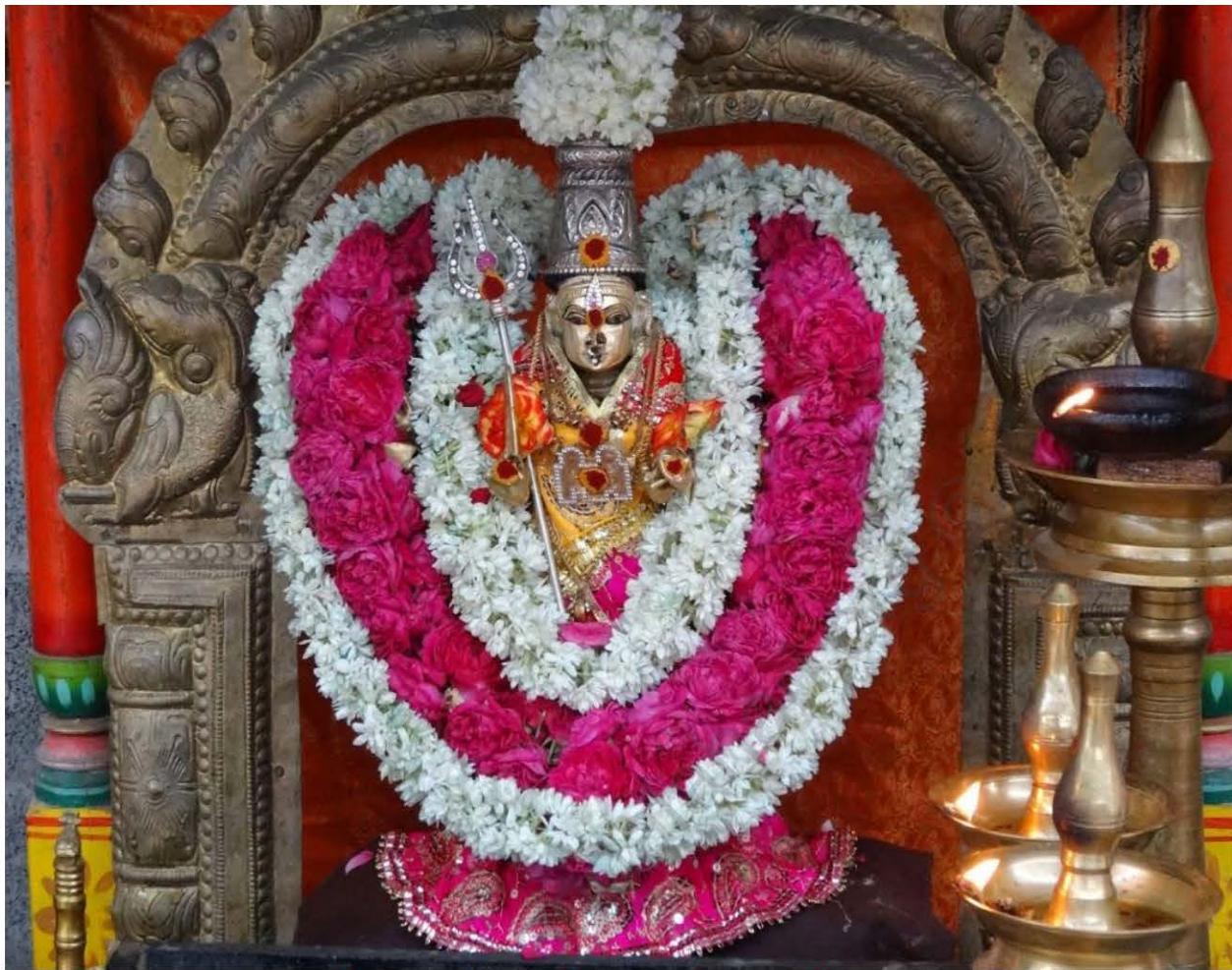
ॐ ह्रीं दुं वं वज्राय नमः । वज्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं शं शक्तयै नमः । शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं दं दण्डाय नमः । दण्ड श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं खं खड्डाय नमः । खड्ड श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं पं पाशाय नमः । पाश श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं ध्वं ध्वजाय नमः । ध्वज श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं गं गदायै नमः । गदा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं त्रिं त्रिशूलाय नमः । त्रिशूल श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं पं पद्माय नमः । पद्म श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ह्रीं दुं चं चक्राय नमः । चक्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(वनदुर्गाम्बा मूलं) – श्री वनदुर्गाम्बा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (त्रिः)
संतर्प्य ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टमावरणार्चनम् ॥

श्री वनदुर्गाम्बायै नमः । – योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

लं पृथिव्यात्मिकायै गन्थं कल्पयामि
हं आकाशात्मिकायै पुष्पाणि कल्पयामि
यं वाय्वात्मिकायै धूपं कल्पयामि
रं अरन्यात्मिकायै दीपं कल्पयामि
वं अमृतात्मिकायै अमृतं महानैवेद्यं कल्पायामि
सं सर्वात्मिकायै ताम्बूलादि समस्तोपचारान् कल्पयामि



। श्री वनदुर्गाम्बा श्री पादुकां पूजयामि नमः ।

© Purnam

वनदुर्गाम्बा अष्टोत्तरशत अर्चनम्

| | | |
|----------------------------|--------------------------------|--------------------------|
| ॐ महिषमर्दिन्यै नमः | ॐ शब्दक्रियायै नमः | ॐ सहस्राक्षयै नमः |
| ॐ श्रीदेव्यै नमः | ॐ आनन्दसन्दोहायै नमः | ॐ श्रुत्यै नमः |
| ॐ जगदात्मशक्त्यै नमः | ॐ विपुलायै नमः | ॐ रत्यै नमः |
| ॐ देवगणशक्त्यै नमः | ॐ ऋज्यजुस्सामाथर्वरूपिण्यै नमः | ॐ रमण्यै नमः |
| ॐ समूहमूर्त्यै नमः | ॐ उद्गीतायै नमः | ॐ भक्त्यै नमः |
| ॐ अम्बिकायै नमः | ॐ रम्यायै नमः | ॐ भवसागरतारिकायै नमः |
| ॐ अखिलजनपरिपालकायै नमः | ॐ पदस्वरूपिण्यै नमः | ॐ पुरुषोत्तमवलभायै नमः |
| ॐ महिषपूजितायै नमः | ॐ पाठस्वरूपिण्यै नमः | ॐ भृगुनन्दिन्यै नमः |
| ॐ भक्तिगम्यायै नमः | ॐ मेधादेव्यै नमः | ॐ स्थूलजड्घायै नमः |
| ॐ विश्वायै नमः | ॐ विदितायै नमः | ॐ रक्तपादायै नमः |
| ॐ प्रभासिन्यै नमः | ॐ अखिलशास्त्रसारायै नमः | ॐ नागकुण्डलधारिण्यै नमः |
| ॐ भगवत्यै नमः | ॐ दुर्गायै नमः | ॐ सर्वभूषणायै नमः |
| ॐ अनन्तमूर्त्यै नमः | ॐ दुर्गास्त्रियायै नमः | ॐ कामेश्वर्यै नमः |
| ॐ चण्डिकायै नमः | ॐ भवसागरनाशिन्यै नमः | ॐ कल्पवक्षायै नमः |
| ॐ जगत्परिपालकायै नमः | ॐ कैटभारिण्यै नमः | ॐ कस्तूरिधारिण्यै नमः |
| ॐ अशुभनाशिन्यै नमः | ॐ हृदयवासिन्यै नमः | ॐ मन्दस्मितायै नमः |
| ॐ शुभमतायै नमः | ॐ गौर्यै नमः | ॐ मदोदयायै नमः |
| ॐ श्रियै नमः | ॐ शशिमौलिकतप्रतिष्ठायै नमः | ॐ सदानन्दस्वरूपिण्यै नमः |
| ॐ सुकृत्यै नमः | ॐ ईशत्सुहासायै नमः | ॐ विरच्छिपूजितायै नमः |
| ॐ लक्ष्म्यै नमः | ॐ अमलायै नमः | ॐ गोविन्दपूजितायै नमः |
| ॐ पापनाशिन्यै नमः | ॐ पूर्णचन्द्रमुख्यै नमः | ॐ पुरन्दरपूजितायै नमः |
| ॐ बुद्धिरूपिण्यै नमः | ॐ कनकोत्तमकान्त्यै नमः | ॐ महेश्वरपूजितायै नमः |
| ॐ श्रद्धारूपिण्यै नमः | ॐ कान्तायै नमः | ॐ किरीटधारिण्यै नमः |
| ॐ कालरूपिण्यै नमः | ॐ अत्यक्षुतायै नमः | ॐ मणिनूपरशोभितायै नमः |
| ॐ लज्जारूपिण्यै नमः | ॐ प्रनतायै नमः | ॐ पाशाङ्गुशथरायै नमः |
| ॐ अचिन्त्यरूपिण्यै नमः | ॐ अतिरौद्रायै नमः | ॐ कमलधारिण्यै नमः |
| ॐ अतिवीरायै नमः | ॐ महिषासुरनाशिन्यै नमः | ॐ हरिचन्दनायै नमः |
| ॐ असुरक्षयकारिण्यै नमः | ॐ दृष्टायै नमः | ॐ कस्तूरिकुइकुमायै नमः |
| ॐ भूमिरक्षिन्यै नमः | ॐ भुकुटीकरालायै नमः | ॐ अशोकभूषणायै नमः |
| ॐ अपरिचितायै नमः | ॐ शशाङ्कधरायै नमः | ॐ शृगरलास्यायै नमः |
| ॐ अद्भुतरूपिण्यै नमः | ॐ महिषप्राणविमोचिन्यै नमः | |
| ॐ सर्वदेवतास्वरूपिण्यै नमः | ॐ कृपितायै नमः | |
| ॐ जगदंशोद्धूतायै नमः | ॐ अन्तकस्वरूपिण्यै नमः | |
| ॐ असत्कृतायै नमः | ॐ सद्योविनाशिकायै नमः | |
| ॐ परमप्रकृतायै नमः | ॐ कोपवत्यै नमः | |
| ॐ समस्तसुमतस्वरूपायै नमः | ॐ दारिध्यनाशिन्यै नमः | |
| ॐ तृप्तै नमः | ॐ पापनाशिन्यै नमः | |
| ॐ सकलमुखस्वरूपिण्यै नमः | ॐ सहस्रभुजाय नमः | |



। श्री वनदुर्गाम्बा श्री पादुकां पूजयामि नमः ।

श्री वनदुर्गाम्बा कवचम्

श्री पार्वत्युवाच –

शिवशङ्कर कल्याणगुण सागर चिन्मय ।
वट मैं वनदुर्गायाः कवचं सुखदायकम् ॥

श्री शिव उवाच –

श्रूणु पार्वति प्रवक्ष्यामि सावधानेन चेतसा ।
कवचं वनदुर्गायाः सर्वसंपत्करं शुभम् ॥

पुत्रदं सुखदं चैव सर्वज्वर निवारणम् ।
गृहनाशकरं चैव भूतोच्चाटनकारकम् ॥

कवचास्य गिरिजे ऋषिः कैरातकाभिधः ।
ईश्वरश्छन्द आख्यातं पाकं नगवरात्मजे ॥

देवता वनदुर्गा च बीजं दुर्गाभिधं प्रिये ।
माया बीजं तु शक्तिस्यात् स्वाहा कीलकमुच्यते ॥
विनियोगस्तु गिरिजे सर्वसौख्य विवृद्धये ॥

प्रणवो मैं शिरः पातु श्री बीजं पतु मैं मुखम् ।
माया मैं दक्षिणं नेत्रं सव्यं मैं मन्मथोवतु ॥

दुर्गा बीजं तु मैं कर्णं दक्षिणं पातु सर्वदा ।
उकारः पातु मैं वामं कर्णं सर्वसुखप्रदः ॥

तिकारः पातु मै नासमूर्ध्वोष्टं ति ष्टकारकः ।
पञ्चमस्वर संयुक्तः पकारस्त्वधरोष्टकम् ॥

रुकारः पातु मै कण्ठं षिकारो दक्षिणं भुजम् ।
किंकारः पातु मै वामं स्वकारो दक्षिणांसकम् ॥

तृतीयस्वर संयुक्तः पकारः पातु वामकं ।
षिकारः पातु मै स्कन्धं दक्षिणं तु भकारकः ॥

स्कन्धं वामं सदा पातु यंकार पातु मै स्तनौ ।
वळिन्नयं तु मैकारः सकारो नाभिगह्वरम् ॥

मुकारः पातु मै पाश्वीं पकारः पातु मै कटिम् ।
स्थिकारः पतु मै गुह्वं तं मै पातु कटिद्वयम् ॥

ऊरुं मै दक्षिणं पतु यकारः सर्वदा मम ।
दिकारः पातु वामोरुं यकारात्पञ्चमो मम ॥

जानुं दक्षिणकं पातु वामं पातु क्यकारकः ।
मकारः पातु मै जंघे दक्षिणे वाम जंघके ॥

यं पञ्चमः क्यकारस्तु बिन्दुयुक्तस्तु गुल्फकम् ।
दक्षिणं पातु सततं वाकारो वामगुल्फकम् ॥

तकारः पतु मै पादं दक्षिणं वाम पादकम् ।
रुद्रस्वरेण संयुक्ते नकारः स मकारकः ॥

पातु पाददल द्वन्द्वं भकारोऽभवतु मे सदा ।
गकार पातु मे पादौ वकारः पातु जानुनी ॥

तृतीय स्वर संयुक्त स्तकारः पातु मे कटिम् ।
यः पञ्चमः पातु नाभिं मकारः पातु मे हृदि ॥

यकारः पातु मे बाहू यकारात्पञ्चमो गळं ।
मकारः पातु मे वक्त्रं यकारः पातु मे लोचने ॥

स्वाकारः पातु मे कण्ठं हाकारः पातु मे शिरः ।
वनदुर्गा शिरः पातु मुखे पातु त्रिलोचना ॥

लोचने पातु गिरिजा कण्ठं पातु सुरेश्वरी ।
कण्ठं पातु विस्तुपाक्षी बाहू पात्वसुरान्तका ॥

हृदयं पातु सततं हाष बाहु समन्विता ।
मध्यं मे पातु विकटा विस्तुपा पातु मे कटिम् ॥

पीतांबरा सदा पातु मम गुह्यं महेश्वरी ।
हैमारबिन्दु निलया पायादूरुद्धयम् मम ॥

जानुद्धयं मे सततं पातु दुर्गा दुरा सदा ।
जंघद्धयं सदा पातु शैलराज सुता मम ॥

कुमारी सततं पातु मम गुल्फद्धयं शिवा ।
पाद द्धयं महाप्रज्ञा वनदुर्गा विलासिनी ॥

इतीदं कवचं बाले सर्वं सौभाग्यं वर्धनम् ।
वनदुर्गास्त्वं जप्त्वा ततो वै सञ्जपेत्प्रिये ॥

सर्वरोगहरं पुण्यं सर्वसौभाग्यं वर्धनम् ।
स सर्वसंपदः प्राप्य मौदते बन्धुभिः सह ॥

अनेन मन्त्रितं चाम्बु यः पिबेद्रोगपीडितः ।
यस्मै सन्दीयते बाले स शीघ्रं वशमेष्यति ॥

अनेन मन्त्रितं फाले तिलकं यैनधार्यते ।
तस्यलोको वशं याति सत्यं सत्यं सुराचिते ॥

श्री वनदुर्गाम्बा हृदयम्

पार्वत्युवाच –

देव देव सुराध्यक्ष सर्वकारण कारण ।
वद मैं वनदुर्गाया हृदयं सर्वकाम मदम् ।

श्री शिव उवाच –

श्रूणु देवि प्रवक्ष्यामि सर्व सौख्यप्रदायकं ।
हृदयं वनदुर्गायाश्तुर्वर्ग फलप्रदम् ॥

पुन्रदं सर्वपापघ्नं सर्वशत्रु विनाशकं ।
पठतां सौख्यजनकं शत्रु वश्यकरं परं ॥

हृदस्यास्य दयिते ऋषिः कैरातकेश्वरः ।
छन्दः पाङ्कुं समुद्धिष्ठं वनदुर्गास्य देवता ॥

दुर्गा बीजं तु बीजस्यात् स्वाहा शक्तिः प्रकीर्तिता ।
विनियोगस्तु कथितः सर्वसौख्य विवृद्धये ॥

नमोस्तु वनदुर्गायै माहेश्वर्यै नमो नमः ।
कात्यायन्यै नमस्तुभ्यं शर्वान्यै नमो नमः ॥

अपर्णायै नमस्तुभ्यं नमस्ते सर्वमङ्गले ।
पार्वत्यै च नमस्तुभ्यं महाविद्या स्वरूपिणि ॥

मृडान्यै च नमस्तुभ्यं अम्बिकायै नमो नमः ।
चण्डिकायै नमस्तुभ्यं आर्यायै च नमो नमः ॥

दाक्षायण्यै नमस्तुभ्यं गिरिराजसुते नमः ।
मेनकातनवे तुभ्यं हेमवत्यै नमो नमः ॥

माहाकाली महागौरी नमस्तुभ्यं सुरेश्वरी ।
नमोस्तु परमेशान्यै शिवायै च शिव प्रदे ॥

भवान्यै च नमस्तुभ्यं भवबन्ध विमोचनि ।
नमस्ते रुद्ररूपिण्यै रुद्राण्यै च नमो नमः ॥

भद्रकाली नमस्तुभ्यं खण्ड हस्ते नमो नमः ।
नमोस्तु चिन्निवसने नीलकौशेय धारिणि ॥

भक्त शत्रुहरे तुभ्यं पीतांबरि नमोस्तु ते ।
रंभातरु समानोरु नमोस्तु विपुलद्युते ॥

विशाल जघने तुभ्यं मणीकाञ्ची विराजिते ।
सिंह मध्ये नमस्तुभ्यं बलिन्नय विभासुरे ॥

गंभीर नाभिके तुभ्यं ब्रह्माण्डोदर रूपिणि ।
कुचनिजित सौवर्ण कलशाद्वितये नमः ॥

कल्पवल्ली समभुजे नमः कञ्जुक शोभिते ।
कम्बुकण्ठि नमस्तुभ्यं राजीवाक्षी नमोस्तुते ॥

बिंबाधरे नमस्तुभ्यं रत्नताटङ्गं शोभिते ।
नीलालके नमस्तुभ्यं दीर्घवेणी नमो नमः ॥

नवरत्न किरीटेन संशोभित शिरोरुहे ।
कौसुंभ वसने तुभ्यं मुक्ताहार विराजिते ॥

शुद्ध जांबूनदमय कण्ठाभरण भूषिते ।
नमः कामारि दयिते रमा पूजित पादुके ॥

वन्यालंकृत सर्वाङ्गि गीर्वाण वनिताचिते ।
सुराराधित पादाब्जे शिव भक्त वर प्रदे ॥

सुरनारी परिवृते नवदूर्वाङ्कुर प्रभे ।
महिषोपरि संस्थाने खङ्ग चापधरे शुभे ॥

इन्द्रीवर दलश्यामे कालमेध समप्रभे ।
नमोस्तु यौवनारुद्धे वनदुर्गि न्मोस्तु ते ॥

कैरातक महेशान मनोनयन नन्दिनि ।
देवदानव संसेव्ये वनदुर्गि नमोस्तु ते ॥

कैलास निलये देवि महादैत्य विमत्दिनि ।
नवरत्न परिप्रोतनानाभरण भूषिणि ॥

नमस्तुभ्यं गिरिसुते महिषासुरमर्दिनि ।
त्रिशूलज्ञितदोर्वल्ली समलङ्घत विग्रहे ॥

परात्परे नमस्तुभ्यं चक्रिण्यै च नमो नमः ।
गदिन्यै नमः नमस्तुभ्यं त्रिशूल वरधारिणि ॥

नमः कल्पवनान्तस्थे कदं वमवासिनि ।
श्रीचन्दन वना वासे पद्मान्तस्थे नमो नमः ॥

नमस्तुभ्यं हरिसुते महादेव मनोहरे ।
नमः षड्वक्त्र जननि जगन्मङ्गल देवके ॥

नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमो नमः ।
इतीतं गतितं बाले सर्व सौख्य विवर्धनं ॥

हृदयं वनदुर्गयाश्वतुर्वर्गं फल प्रदं ।
महाविद्या प्रतिकरं राज्यपदं मोक्षप् प्रिये ॥

अष्टैश्वर्यकरं देवि शत्रूच्छाटन हेतुकम् ।
यः प्रातर्नियमसः स्नात्वा दशवारं दिने दिने ॥

मासमात्रं पठेदेवि तस्य सर्वे च शत्रवः ।
मित्रतां यान्ति दयिते सत्यं सत्यं मयोदितं ॥

अजप्त्वा हृद यस्तु मन्त्रं पठति मानवः ।
सर्व दुःखानि संप्राप्य स दरिद्रो भवेत् धुवं ॥

इति सर्वेषु वेदेषु वदन्ति परमर्षयः ।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं किमन्यत् श्रौतुमिछसि ॥

मानसोपचारैः संपूज्य ।

ॐ ह्रीं हुं हुं हुं ॐ श्रीं ह्रीं कलीं हुं
(वनदुर्गाम्बा मूलं) हुं ह्रीं ॐ ॥

इत्येतत् मन्त्रं दश वारं जपेत् ॥

© Purnanandalahari.org ©



। श्री विन्ध्याचल निवासिनी विन्ध्यवासिनी वनदुर्गाम्बायै नमः ।

பூ
வனதுர்க்கை இரட்டைமணி மாலை

(பாலகவி பூநாராயண பாரதி)

காப்பு

பற்றறவே நின்றாலும் பாரின் துயர் துடைத்தோன்
முற்றறியோ கானந்தன் முன்னிற்க - கொற்றவையாள்
வானார் இரட்டைமணி மாலை எனும்பனுவற்
நேனார் கவிதையுளே சேர்ந்து.

நால்

தாயோ! வனதுர்க்கை! தான்பணிந்தேன் என்றாலுக்கு
நீயே துணையாக நின்றாருள்வாய் - மாயா
மலமகற்றி உள்ளத்தின் மாசொழித்து ஞான
வலகமற்றி வாழ்வையருள் வாய்!

வாய்க்கும் பிறவியின் வாய்ப்பிழந் தொன்னார் வயமுளைந்து
காய்க்கும் கனிக்குமே வேற்றுமை காணுக்கருத்தினராய்
நாய்க்கும் சிறுத்து நட்டையிற் ரேர்காண நாயகியைத்
தாய்க்கும் பெரிதெனச் சார்ந்திடின் பேரின்பம் சார்குவரே!

சாரமிது நெஞ்சேகேள்! தாயாம் வனதுர்க்கை
பாரமெலாம் நீக்கிப் பதந்தருவாள் - வாரமுடன்
பூப்பெய்து நாளுமவள் பொற்றுள் புகழ்ந்திடவே
பூப்பெய்தும் வாழ்வெல்லாம் பொன்.

பொன்னே! மணியே! புலங்கடந் தாருக்கும் போற்றரிய
மின்னேஒண் மின்னிகர் மெல்லிடை யாய்புணர் மென்முலையாய்!
தன்னே ரிலாத தயாபரி! நின்னைச் சரணைடந்தேன்
கன்னேரும் நெஞ்சிற் சழல்பதிப் பாய்தூர்க்கைக்கற்பகமே!

கற்பகவே லோச்சியளம் கந்தற் பயந்தவளே!
பொற்பகமாய் யாண்டும் பொலிகுவோய்! - வெற்புநிகர்
வல்வினையைப் போக்கும் வனதுர்க்கையம்மே! நின்
செல்வபதம் தந்துயர் தீர்.

தோ விகீர்யலாம் தீர்த்தருள் செய்கின்ற செல்விபொலன்
நோ மென்றிம் நேர்ந்தவள் தண்மதி நேர்சண்டயாள்
கூராழி யாதிய கொள்கரத் தாள் வளக் கொற்றவையாள்
தோ ரட்டதுகீஸ் சேர்ந்தவர் வாழ்வினிற் சிக்கவின்றே!

இன்றேனும் நெஞ்சே இறுதியாய்ப் பற்றிக்கொள்
கன்றேயும் கொங்கைக் குமரியாள் - நன்றேனும்
தேதேனும் நீசாணம் தேவி! என்பார் துண்பறுக்கும்
பாதார விந்தப் பதம்.

பதத்தே யுருகப் பகவதி! கொற்றவைப் பார்ப்பதியே!
மதத்தே யுறுத்த மயிடனைச் செற்றுவிண் வானவர்தாம்
முதத்தே முழுகிட முத்தருள் செய்தபொன் மோகினி! என்
இதத்தே கருணை இனையவைப் பாய்காணத் தேந்திழையே!

இழைக்கின்ற வெவ்வினைபோம்! ஏதமறும்; யாவும்
அழைக்கின்ற போதே அருகும் - உழைக்கன்று
ஒத்தவிழி யாள்வனத்தாள் ஒங்கரிமா வரகணத்தாள்
புத்தமுத்த தாள்பணிந்த போது.

போதந்து நின்னடிப் பொற்றுமரையிற் புகலடைந்தார்
கேதன் சவட்டுவை! கேடற்ற வாழ்விற் கிளர்ச்சிதரும்
பாதம் புணர்த்துவை! பன்னக்பூடனி! பார்கடையாம்
பூதங்க ளாகிப் பொலியும் வனதுர்க்கைக் போதனமே.

போதப் பெருநறவின் புத்துணர்வாய்த் தீப்பிழம்பாய்ச்
சீதப் புனலாய்த் திகழ்ந்திடுவாள் - வேதத்தின்
அங்கியென நின்றதுர்க்கை ஆரணியத் தாயவள்தன்
பங்கயநேர் பாதமே பற்று.

பற்றுடன் நின்றன் பகவதி! பாதம் பணிந்தவர்தாம்
முற்றிய நெற்கதிர் மூதன்னம் நெய்திலம் மொய்ம்புடனே
கற்றுறு மந்திரம் காய்கனல் வேள்வி கனிந்திடுவார்
சுற்றுள யாவும் அன் னார்ஷளம் இன்புறச் சொல்லுமன்றே!

சொல்லலால் எனது துயர்அறுமோ! கொற்றவையே!
கல்லாகும் நெஞ்சிற் கயவரெலாம் - புல்லாகப்
புந்தியழிந் தூரிழிந்து போக்கிடமற் றேயிரிய
முந்தியருள் ஈவாய் முனைந்து.

முனைந்தேன் பகவதி! மோகன மூர்த்தியை முற்றுமுள்ள
 நிலைந்தேன் பயத்தினை நீக்கிட நில்லை. நெஞ்சிவிலே
 நலைந்தேன் உரக்கமில் நாயகி என்றுகீர்நான்கவிதை
 புளைந்தேன் உழையவை னேய்கிண யன்றியான் போற்றலென்னோ!
 என்னேந்தும் தேக்கடையாய்! என்வாழ்விள் சிக்கிலைத்தீப்
 புண்ணேந்தும் வண்ணைம் பொசுக்குவாய் - வள்ளுவேந்தும்
 கொங்கையளோ அச்சமின்றிக் கூத்தியற்றும் வாழ்வென்றன்
 அங்கையிலே நிற்க அருள்,

அருளுந்து கட்கடை அம்பிகை கொற்றலை ஆரணியத்
 திருஞஞ்சு வாழ்வினில் இன்னலெல் வாமருத் தீந்திடுவாள்
 தெருஞஞ்சு தகைமையும் செல்வமும் கல்வியும் சிக்கலற்ற
 பொருஞஞ்சு ததும்பப் பொலன்பூத் ஆனந்தப் போகமுமே!
 போகத் தரவினையே பூஞைப் பூட்டித்தன்

ஆகத் தணிந்த அபிராமி - சாகத்
 துணிந்தார்க்கும் சோதிதரும் சுந்தரியாள் பாதம்
 பணிந்தார்க்கே தொண்டுசெயும் பார்.

பாரிடந் துன்னும் பகவதி யேஅன்னப் பார்ப்பணனைம்
 பாரிடந் துன்னும் அப் பண்ணவ னுந்தொடாப் பார்ப்பதியே!
 போரிடந் தெவ்வர்ப் பொசுக்கும் வனதுர்க்கைப் பூங்கொடியே!
 யாரிடஞ் சொல்லுவ னேநினை யன்றியென் இன்னலின்றே.

இன்றேயிப் போதேநீ என்பக்கல் கண்திறப்பாய்!
 கன்றுக யானும் கதறுகிறேன் - குன்றேபோல்
 மாரு மனத்து வலிமையுடன் அச்சமறக்
 கூருயோ சொல்லால் குறித்து.

குறித்தே பிரணவ சேதன துர்க்கையாக் கொள்வித்திலே
 செறித்தே உபாசனை செய்திடும் உன்பத்தர் செய்வினைகள்
 முறித்தே நினைந்த முடிக்குவர்சாதக மொய்ம்புதனைத்
 தறித்தே உனதருள் தாங்கொண் டிலங்குவர் தாய்வனமே!
 கானகம் போல் யாண்டுங்கண் கட்டியதாம் வாழ்வினிலே
 போனகமாய் ஆவி புரந்தருள்வாய் - தேவிகரும்
 பாதமலர் போற்றும் பனுவலிதை ஒதுபவர்
 ஏதமெனின் என் என்பார் இங்கு.

सदा विद्याजुसंहतिः

1. What exact places are to be more vigilant while performing a navāvarana pooja?

- The Bell must be placed on a base, not directly on the floor or any table.
- The sāmānyārghya and viśeṣārghya base mandalas to be drawn instantly , not early.
- The Ṛṣi chandas nyāsa of the mūla mantra to be done only at the end of all nyāsas and ending with dig-bandhana. After naivedya and bali, Dhyana, Pañcopacāra (in mind) Japa of mūla mantra is done, followed by all the end dig vimoga nyasas ending with japa samarpana. If Pañcadaśi level upasaka is doing the saparya then after mūla vidyā nyāsa the Ṛṣi chandas to be done, if ṣodaśi upasakas , then after the sthitī nyāsa of ṣodaśi that Ṛṣi chandas is to be done.
- After five fold worship of Sudhā devi in the viśeṣārghya (Pañcopacāra), Sprinkle the arghya on to all and meditate that vidya is all pervading (sarvam vidyā mayam bhāvayet), This is an important bhavana.
- After Āvāhana of Devi , perform the ḫadanga mudras on the body of the invoked deity and show the Āyudha mudras meditating of them as in her hands.
- Reciting Lalita sahasranama as a stotra is more appropriate than the arcana.
- After Trisati arcana no other ritual or avarna is to be done, then proceed to naivedya.
- During bali, chant the mantra thrice and offer the samayarghya over askatas on the tatva mudra in the left hand once.
- If married, perform Shakti pooja first, then only worship another suvsaini if invited for the same.

2. What is the interval in which an elaborate pranapratishtha is to be done in sriyantra and other yantras?

The elaborate ritual of pranapratishat with havan is to be done by the self or Guru or a senior upasaka. If the yantra is made of copper, it has to be repeated after every 12 years. If it is made of silver, the time interval will be fifty years. In case of gold, only once the pranapratishtha is needed. In the case of sphatikA, no praNapratishtA is needed.

The daily laghu pranapratishtha is to confirm in our mind the presence of the deity after the main ritual.

என்னா யிரத்தாண்டு யோகம் இருக்கினும்
கண்ணார் அமுதினைக் கண்டறி வாரில்லை
உன்னாடிக் குள்ளே ஒளியற நோக்கினால்
கண்ணடி போலக் கலந்துநின் றானே

- திருமந்திரம் 603



Eight thousand years of yOgA dear
Might not take you to Her near
Light you seek within you clear
Right like mirror you merge full gear